thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 41 06 से 12 नवम्बर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 का. शु.-15

आर्य समाज को तेजस्वी एवं सक्रिय संगठन का रूप देने की नितान्त आवश्यकता – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज गंज जिला–गाजियाबाद के वार्षिकोत्सव में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का किया गया भव्य स्वागत

आर्य समाज गंज जिला-गाजियाबाद में चार दिवसीय वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक चलने वाले इस वार्षिकोत्सव के अवसर पर चारो दिन विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आर्य संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी थे। इस अवसर पर युवा भजनोंपदेशक श्री भानु प्रकाश शास्त्री बरेली के सुमधुर भजनों का रसास्वादन श्रोताओं ने किया तथा आचार्य राजदेव शास्त्री औरैया के विद्वतापूर्ण प्रवचन चारो दिन होते रहे।

इस अवसर पर 2 नवम्बर को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी की गरिमामयी उपस्थिति से जन-समूह में उत्साह का वातावरण पैदा हो गया। आर्य समाज गंज, आर्य केन्द्रीय सभा एवं जिला आर्यउपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के संयोजन में स्वामी आर्यवेश जी तथा पं. माया प्रकाश त्यागी जी के स्वागत समारोह का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री राजेश्वर शास्त्री प्रधान, श्री तेजपाल सिंह आर्य मंत्री श्री सत्यवीर चौधरी, श्री ज्ञानेन्द्र आर्य मंत्री जिला सभा, श्री सुरेन्द्र जी-कोषाध्यक्ष जिला सभा, श्री जयपाल सिंह, स्वामी सत्यवेश सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी का शॉल उढ़ाकर तथा पुष्प माला पहनाकर स्वागत सम्मान किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपने उद्बोधन में वेद के एक मंत्र की व्याख्या करते हुए जन मानस में मेधा बुद्धि की कामना करते हुए कहा कि हम अच्छा सोचें और भटकाव में न रहें, अच्छे रास्ते पर चलने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि हम यह सोचे कि यह सारा संसार परमात्मा का है वहीं सबका स्वामी हैं उसने ही हमें जो हम आज हैं वह सब दिया है तो हमारा अज्ञान, अन्धकार, ईर्ष्या द्वेष वैमनस्य सब दूर होगा और प्रेम की गंगा बहने लगेगी। पाप और राग द्वेष दूर होंगे और जीवन शुद्ध, पवित्र और निर्मल बन जायेगा। उन्होंने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी पर पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि सार्वदेशिक सभा का कार्य प्रगति पथ पर सन्तोष जनक ढंग से बढ़ रहा है और वह सही मार्ग पर चल रही है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सभा अन्य कार्यों में सफल हो रही है उसी प्रकार उसे एकता प्रयासों में भी निश्चित सफलता प्राप्त होगी।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी प्रेरणादायक उद्बोधन में आर्य समाज के अतीत पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एक बार फिर आर्य समाज के उसी तेजस्वी स्वरूप को राष्ट्र के सामने प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। आज देश की जनता संकटों तथा अनेकों समस्याओं से जूझ रही है। उन्होंने आर्यजनों का आह्वान करते हुए कहा कि वे आर्य समाज के स्वरूप को तेजस्वी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के क्रिया-कलापों को करने के लिए सक्रिय हो जायें। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक सुधार, राष्ट्र निर्माण तथा मानव निर्माण तथा वेद प्रचार हेतु अर्पित कर दिया। अभी दीपावली पर हम सबने उनका निर्वाण दिवस मनाया लेकिन निर्वाण दिवस मनाने की सार्थकता तभी है जब हम उनके विचारों, उनके बताये मार्ग ज्ञान व वेद के प्रकाश को घर-घर में पहुँचाये। स्वामी जी ने कहा कि आज हम सब संकल्प लें कि भारतीय संस्कृति, सदाचार तथा वैदिक सिद्धान्तों के विषय में अपने मित्रों तथा अपने आस-पास के व्यक्तियों से वार्ता करेंगे तथा अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों तथा समाज में फैल रहे भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, नशाखोरी जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर आर्य समाज क्या सोचता है इसकी विस्तार से चर्चा करेंगे। हम सब मिलकर पूर्ण उत्साह से सप्तक्रान्ति के मुद्दों पर काम करें जन-जन को इसके बारे में बतायें और अपने कार्यक्रमों के द्वारा लोगों को आकृष्ट करने का प्रयास करें। समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करके बुराईयों के विरुद्ध पूरे देश में जोरदार अभियान चलाने की आवश्यकता है।

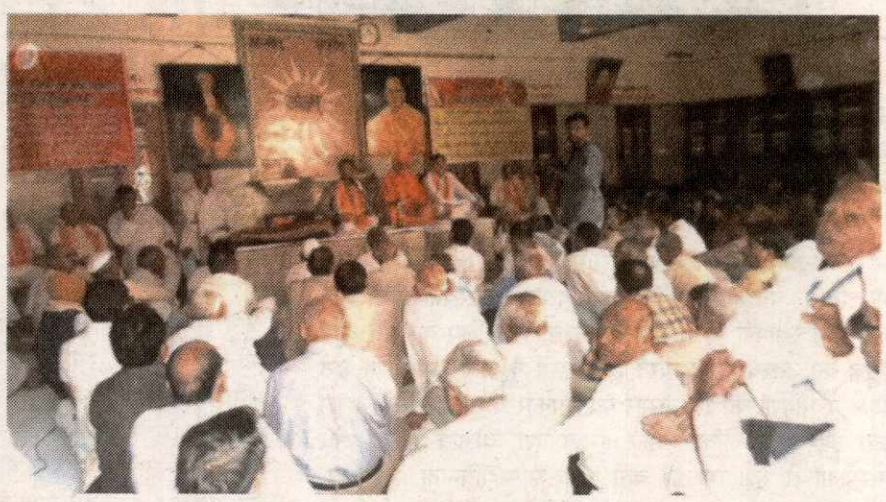

प्रत्येक समाज को दिशा-निर्देश प्रदान करें।

स्वामी जी ने शराब तथा नशाखोरी से समाज को होने वाली क्षति की चर्चा करते हुए कहा कि आज का युवा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर नशे के जंजाल में फंसता जा रहा है इसे रूकवाने की नितान्त आवश्यकता है उन्होंने सरकार से अपील की कि एक दो राज्यों में नशाबन्दी लागू करने से कुछ नहीं होगा। पूर्ण शराबबन्दी पूरे देश में अविलम्ब लागू किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पूरे राष्ट्र में शराबबन्दी की एक नीति घोषित की जानी चाहिए।

स्वामी जी ने गो-वंश की वृद्धि तथा गोहत्या, पशुबलि, मांस निर्यात के बारे में विवरण प्रस्तुत करते हुए सरकार से अपील की कि पशुबलि गोहत्या तथा मांस निर्यात को तुरन्त बन्द किया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि स्थानीय आर्य समाजों को व्यवस्थित और सक्रिय करें तथा स्थानीय लोगों को आकर्षक कार्यक्रम करके अपने साथ जोड़ने का काम करें। आर्य समाज के कार्यकर्ता अपने सद्व्यवहार से अपने आचरण से लोगों को प्रभावित करें तथा उनको साथ लेकर जन-जागृति के कार्यक्रम को आगे बढ़ायें। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाजों में कुछ ऐसे कार्यक्रम आयोजित करें जिससे आर्य समाजों में चहल-पहल हो तथा स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। हमें आर्य समाज को बहु उपयोगी आर्य समाज का स्वरूप प्रदान करना है। स्वामी जी ने प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों का आह्वान किया कि वे अपने-अपने प्रान्तों की आर्य समाजों में सक्रियता लाने के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करें तथा सभा प्रधान ने अपने धारा प्रवाह ओजस्वी उद्बोधन में आर्य समाज को उपयोगी समाज तथा जन-जन का हितैशी समाज बनाने पर बल देते हुए ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों, उपदेशकों से अपील की आर्य समाज के मन्तव्यों, सिद्धान्तों को घर-घर में पहुँचाने के लिए वे संकल्पवद्ध होकर कार्य करें। उन्होंने कहा कि हमारे कार्यों का परिणाम दिखाई देना चाहिए तभी हमारे कार्यों की सार्थकता है। स्वामी जी ने युवाओं को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि एक वर्ष, दो वर्ष पांच वर्ष या आजीवन जैसी आपको सुविधा हो आप ऋषि मिशन को आगे बढ़ाने में अपना मूल्यवान समय दें क्योंकि आर्य समाज युवाओं को आगे लाना चाहता है उन्होंने कहा कि युवाओं में वो शक्ति है कि आर्य समाज की शिथिलता को तोड़कर वे उसे तेजस्वी स्वरूप प्रदान कर सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि हम युवा वर्ग को आमन्त्रण देते हैं कि जो युवा आर्य समाज से जुड़ना चाहते हैं ऋषि मिशन को आगे बढ़ाना चाहते हैं वे हमसे सम्पर्क करें। सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में सम्पर्क करें हम उनका स्वागत करते हैं।

स्वामी जी ने आर्य समाज के संगठन की चर्चा करते हुए कहा कि आज संगठन में कुछ बिखराव नजर आ रहा है और हम उसके एकीकरण के लिए निरन्तर प्रयास कर रहे हैं लेकिन बिखराव के कारण हम खाली नहीं बैठ सकते। हमें अपने कार्यों को जारी रखना है तथा देश के हर क्षेत्र में आर्य समाज की गतिविधियों को सुचारू ढंग से चलाते रहना है। उन्होंने कहा कि अपने कार्यों की रिपोर्ट सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में अवश्य भेजें जिसे हम "वैदिक सार्वदेशिक" में प्रकाशित करेंगे, इससे जहाँ आपके कार्यों का प्रचार होगा वहीं दूसरी तरफ अन्यों को भी प्रेरणा मिलेगी। स्वामी जी के उद्बोधन के बीच में कई बार करतल ध्वनि से लोगों ने स्वामी जी के विचारों का समर्थन किया। गंज आर्य समाज एक ऐतिहासिक आर्य समाज है भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह कभी इस समाज के मंत्री रहे थे। स्वामी जी के उद्बोधन से क्षेत्र की आर्य जनता में उत्साह का वातावरण बना तथा युवाओं में नये जोश का संचार हुआ।

कार्यक्रम का सफल संचालन आर्य उपप्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री ज्ञानेन्द्र आर्य ने किया। समारोह अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

समाज में व्याप्त कुरीतियों, पाखण्डों और नशे के विरुद्ध आर्यजन आगे आयें – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज गोविन्दपुरी मोदीनगर, में हुआ बहुकुण्डीय विशाल यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज गोविन्दपुरी मोदीनगर में दिनांक 2 नवम्बर को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी के पहुँचने पर कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया। स्वामी जी को पुष्प मालाओं से लाद दिया गया। स्वामी जी के पहुँचने से कार्यकर्ताओं में विशेष जोश हिलोरे ले रहा था।

स्वागतोपरान्त सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने जन-समूह को उद्‌बोधन देते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना मानव मात्र के कल्याण के लिए की थी। आर्य समाज का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए महर्षि ने आर्य समाज के छठे नियम में घोषणा की कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। लेकिन आज हमारा देश विभिन्न संकटों और समस्याओं से जूझ रहा है। चारों तरफ साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, कन्या भ्रूण हत्या आदि बुराइयाँ फैली हुई हैं तथा युवा वर्ग पतन के गर्त में गिरता जा रहा है। समस्याएँ भयावह रूप लेती जा रही हैं और इनका निराकरण केवल आर्य समाज के द्वारा ही सम्भव है। स्वामी जी ने कहा कि आज आवश्यकता युवा शक्ति को संस्कारित करने तथा अपने साथ जोड़ने की है। आर्य समाज में युवाओं की कमी दूर करने तथा आर्य समाज में नवीन जीवन फूंकने के लिए पूरे देश में विशेष अभियान चलाये जायेंगे। आर्य समाज में फैली गुटबाजी और बिखराव की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज को संगठित करने के लिए हर सम्भव प्रयास किये जा रहे हैं आप सबका सहयोग भी इस कार्य में अपेक्षित है। स्वामी जी ने आर्यजनों का आह्वान करते हुए कहा कि जब तक यह विवाद समाप्त नहीं होते हम सब अपने-अपने स्तर पर कार्य की गति को आगे बढ़ाये और उन वर्गों में काम करें जो समाज से अलग-थलग पड़े हुए हैं। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या, शराबखोरी पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा सारे देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने की हम सरकार से माँग करते हैं क्योंकि इस नशे के कारण हमारा युवा वर्ग गर्त में जा रहा है। स्वामी जी ने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि महर्षि के मिशन को पूर्ण करने के लिए संकल्पबद्ध होकर कार्य करें।

इससे पूर्व आर्य समाज के विद्वान् आचार्य पुनीत शास्त्री के ब्रह्मत्व में बहुकुण्डीय यज्ञ में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ प्रदान की। आर्य समाज के मंत्री श्री विश्वबन्धु आर्य के कठिन परिश्रम से कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा सम्मानित

शुक्रवार, दिनांक 17 अक्टूबर, 2014 को पुरुषोत्तम हिन्दी भवन में दिल्ली साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित भव्य सम्मान समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार एवं यशस्वी लेखक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को शॉल, प्रतीक चिन्ह, ग्रथादि भेंटकर 'सम्मानित साहित्यकार' के रूप में सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान पूर्व चुनाव आयुक्त श्री जी. बी. जी. कृष्णामूर्ति ने प्रदान किया। सम्मान के पूर्व डॉ. कथूरिया की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए पूर्व महापौर एवं दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री महेश चन्द्र शर्मा ने कहा कि भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर (गुजरात) में हिन्दी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष रह चुके डॉ. कथूरिया ने माँ भारती की बहुत सेवा की है। वे प्रतिष्ठित समालोचक, सहृदय कवि, प्रखर चिन्तक, गंभीर निबंधकार, निर्भीक पत्रकार, निःस्वार्थ समाजसेवी, कुशल प्रशासक, उत्कृष्ट प्रवचनकर्ता, वैदिक विद्वान्, शिष्यवत्सल प्राध्यापक एवं कृतकार्य प्रोफेसर हैं। सम्मेलन के मंत्री डॉ. रवि शर्मा 'मधुप' ने डॉ. कथूरिया का परिचय देते हुए कहा कि मैं डॉ. कथूरिया का शिष्य रहा हूँ। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में भी लगभग 38 वर्षों तक अध्यापन कार्य किया हैं 45 स्तरीय ग्रन्थों के यशस्वी लेखक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया बहुभाषाविद् हैं और उन्हें 70 से अधिक सम्मानों-पुरस्कारों से अलंकृत किया जा चुका है। ऐसे कृती विद्वान को 'सम्मानित साहित्यकार' के रूप में अभिनन्दित करने में सम्मेलन स्वयं को गौरवान्वित

अनुभव करता है। डॉ. जी. बी. जी. कृष्णमूर्ति के साथ श्री राकेश गुप्ता (प्रबंध निदेशक, साधना टी. वी. चैनल), श्रीमती किरण चोपड़ा (अध्यक्ष, वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब), श्री राहुल देव (वरिष्ठ पत्रकार), सी. ए. मनोज कुमार गोयल (अध्यक्ष, समर्पण एन. जी. ओ.), श्रीमती इन्दिरा मोहन (महामंत्री, दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन) आदि ने मंच को सुशोभित किया। इस समारोह में बहुत बड़ी संख्या में साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षक एवं साहित्य प्रेमी मौजूद थे।

– योगेश्वरचन्द्र आर्य, प्रचारमंत्री, आर्य समाज, बी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज हथीन जिला मेवात, हरियाणा के कोषाध्यक्ष एवं प्रसिद्ध दानवीर श्री चन्द्रपाल वर्मा ने अपने पावन सहयोग से गृह प्रवेश के अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ कराया। श्री कृष्ण आर्ष गुरुकुल गोमत (देवालय) उ. प्र. के विद्यार्थियों ने सस्वर सामवेद के मंत्रों का पाठ किया। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने ब्रह्मा की भूमिका निभाई। श्री सतीश सत्यम दिल्ली, श्रीमती सन्तोष वाला आर्या आदि ने भजन प्रस्तुत किये। पूर्णाहुति के पावन अवसर पर जनपद पलवल के सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर आहुति प्रदान की। वर्मा परिवार की ओर से ऋषि-लंगर का आयोजन भी किया गया।

– सत्यवीर सिंह आर्य, प्रधान

यज्ञमय ढंग से मनाया 'यश' ने 59वाँ जन्मदिन

जयपुर : 5 नवम्बर, सेठ लक्ष्मीनाराण स्मृति संस्थान संरक्षक, समाजसेवी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' का 59वां जन्मदिन यज्ञमय ढंग से मनाया गया। संस्थान अध्यक्ष डॉ. प्रमोद पाल के अनुसार प्रातः अरविन्द पार्क में लॉफिंग क्लब में फिर मानव कल्याण यज्ञ व रक्तदान शिविर हुआ। 59 कम्बल वितरण अभियान प्रारम्भ कर राजस्थान स्वास्थ्य योग परिषद् ऋषि उद्यान अजमेर के अतिथि यज्ञ व मानसरोवर अग्रवाल समाज को सात्विक दान द्वारा परोपकारी कार्यों में सहयोग किया गया।

श्री यशपाल 'यश' ने रक्तदान का महात्म बताते हुए इसे आत्मिक शुद्धि व नये रक्त संचार द्वारा शारीरिक आरोग्यकारी कार्य बताया।

रक्तदान डॉ. प्रमोद पाल, पवन आर्य, दीपांकर, सुनील सैनी, सुनील वर्मा, रामनिवास, अभिषेक कुमार सहित 13 लोगों ने किया।

– प्रदीप आर्य, सचिव, मो.:-9828014018

आर्य समाज, दयानन्द नगर गाजियाबाद (उ. प्र.)

दिनांक 20 से 23 नवम्बर, 2014 (बृहस्पतिवार से रविवार)

परम पिता परमेश्वर की असीम कृपा से आर्य समाज, दयानन्द नगर, गाजियाबाद (उ. प्र.) दिनांक 20, 21, 22 व 23 नवम्बर, 2014 बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार को वेद कथा का आयोजन कर रहा है। जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् माननीय डॉ. श्री वेदपाल जी, आचार्य पण्डित श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी एवं भजनोपदेशक पं. नरेश दत्त जी पवार रहे हैं। आप सभी से विनम्र निवेदन है कि वेद कथा में इष्ट मित्रों एवं परिवार सहित पधार कर अभ्युदय और निःश्रेयस सिद्धि का मार्ग प्रशस्त करें।

कार्यक्रम

बृहस्पतिवार से शनिवार 20, 21, 22 नवम्बर, 2014 तक प्रतिदिन

प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक यज्ञ, भजन, वेद कथा अपरान्ह 2.30 बजे से सायं 5.30 बजे तक भजन, वेद कथा

रविवार दिनांक 23 नवम्बर, 2014

प्रातः 8 से 9 बजे तक यज्ञ। 9 बजे से 9.30 बजे तक प्रातः राश 9.30 बजे से अपरान्ह 1 बजे तक भजन एवं वेद कथा विषय : धर्म और राजनीति वयोवृद्ध माता श्रीमती सावित्री कपूर का सम्मान

मुख्य अतिथि : थल सेना अध्यक्ष (सेना निवृत्त) श्री वी. के. सिंह जी (राज्य मंत्री भारत सरकार)

सभा अध्यक्ष : माननीय श्री ओम प्रकाश आर्य जी डायरेक्टर यू. पी. सेरेमिक्स एण्ड पॉटरीज लि. अध्यक्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय सासनी (हाथरस)

– कैलाश चन्द्र अरोड़ा, मंत्री, आर्य समाज दयानन्द नगर गाजियाबाद (उ. प्र.)

thearyasamaj.org

मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा कितना सच! कितना झूठ!!

- डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

प्राण-प्रतिष्ठा कैसे?

कहा जाता है कि मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा वैदिक मन्त्रों के साथ शास्त्र विहित विधान से की जाती है। इससे बड़ा झूठ और वह भी धर्म के नाम पर, कहीं देखने को नहीं मिलेगा। वेदों में जब साकारवाद नहीं निराकारवाद है, अनेकेश्वरवाद नहीं एकेश्वरवाद है, मूर्तिपूजा नहीं निराकार ब्रह्म की स्तुति, प्रार्थना, उपासना का विधान है तो फिर किन वेद मन्त्रों से मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करना सम्भव है?वेद मन्त्रों के गलत विनियोग और प्रयोग से स्वार्थ सिद्धि के लिए यदि ऐसा किया जाता है तो उसका औचित्य क्या है सिवाय लोगों को भ्रमित करने और व्यावसायिकता चमकाने के?कोई भी ऐसा वेदमन्त्र नहीं है जो मूर्तिपूजा का समर्थन करता हो, मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा को स्वीकारता हो अथवा प्राण-प्रतिष्ठा का विधान रचता हो। यदि ऐसी कोई बात होती तो फिर शिरडी-साईं की मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करने पर कोई विवाद शंकराचार्य खड़ा ही न कर पाते। प्राण-प्रतिष्ठा को कुछ चुने हुए हिन्दू देवी-देवताओं तक सीमित रखना स्वयं में इस तथ्य को अनावर्त करता है कि सिवाय धोखा देने के, भ्रम फैलाने के कोई दूसरी बात इसमें नहीं है। वेदों में, उपवेदों में, दर्शनों में, उपनिषदों में, मनु स्मृति में कहीं कोई शास्त्रीय विधान मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करने का नहीं है क्योंकि ये सभी शास्त्र तब अस्तित्व में आये थे जब भारत में मूर्तिपूजा का प्रचलन ही नहीं था। अत: इस सन्दर्भ में यदि किसी शास्त्रीय विधान का हवाला दिया जाता है तो निश्चय ही वह शास्त्र और विधि-विधान अशास्त्रीय है, अवैदिक है, मनगढ़ंत है, स्वार्थी धर्मध्वजों की कल्पना है, व्यावसायिक बुद्धि का परिणाम है।

एकलव्य का प्रमाण गलत है

मूर्तिपूजा का औचित्य सिद्ध करने के लिए पौराणिक विद्वान् प्राय: महाभारतकालीन एकलव्य का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि द्रोणाचार्य की मूर्ति अपने समक्ष रख उसने धनुर्विद्या में अर्जुन और कर्ण से भी अधिक पारंगता व महारत हासिल कर ली थी। महाभारत में पहले तो एकलव्य को द्रोणाचार्य की मूर्ति की पूजा करते कहीं नहीं दिखाया गया है। दूसरे, द्रोणाचार्य अपने युग के जीवित युग-पुरुष थे, देवता नहीं थे कि उनकी मूर्तिपूजा की जाती। किसी भी गुरु या ऋषि की मूर्तिपूजा का विधान शास्त्रों में नहीं है। तीसरे, एकलव्य ने मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा कराई थी इसका भी कोई प्रमाण नहीं है। चौथे, एकलव्य दलित था अत: उसे तो वैसे ही मूर्तिपूजा का अधिकार पौराणिक मान्यता के अनुसार नहीं होना चाहिए था। पांचवें, महाभारत काल में मूर्तिपूजा थी ही नहीं तो एकलव्य ने कहाँ से मूर्तिपूजा की होगी?छठे, अपने समक्ष द्रोणाचार्य की मूर्ति रख एकलव्य अपने उस रोष, आक्रोश, प्रतिशोध को जीवंत रखने में प्रयासरत भी तो हो सकता था जिसे द्रोणाचार्य के नकारात्मक दृष्टिकोण ने पैदा किया था?दुर्जन-तोष न्याय से यदि यह मान भी लिया जाये कि एकलव्य ने मूर्तिपूजा की बदौलत ही धनुर्विद्या में सिद्धि प्राप्त की थी तो सिद्ध है कि बिना प्राण प्रतिष्ठा वाली मूर्ति में भी बरदान देने की क्षमता सम्भव है। तब मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करने का ढोंग क्यों रचा जाता है?वैसे भी जब परमात्मा कण-कण में विद्यमान है, मूर्ति में भी विद्यमान है फिर पुन: मूर्ति में उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करने का प्रदर्शन क्यों?ऐसा केवल लोगों को भ्रमित करने, उनको ठगने का उपक्रम मात्र है।

चमत्कारों का प्रभाव क्षणिक है

भारत में अनेक ऐसे मन्दिर व सिद्धपीठ हैं जिनके बारे में दावे के साथ पुरजोर प्रचार किया जाता है कि वहाँ साधना करने से यथाशीघ्र सिद्धि मिलती है, भूत-प्रेत से छुटकारा मिलता है, प्रमाण मिलते हैं कि मुम्बई का मुंवा देवी या सिद्धि-विनायक मन्दिर, कोलकाता (दक्षिणेश्वर) का काली देवी का मंदिर में अवतारी देवी-देवता आज भी विराजमान हैं। वृन्दावन का निधिवन तिरुपति, बाला जी आदि मन्दिरों का विशेष रूप से इस सन्दर्भ में हम उल्लेख कर सकते हैं जहाँ प्रतिदिन हजारों की संख्या में लोग भक्तिभावना से जाते हैं। भारत ऋषि-मुनियों की धरती रही है। उन्होंने कब कहाँ बैठकर तपस्या-साधना की सब इतिहास की तह में दबते चले गये। लेकिन ऐसे एक नहीं

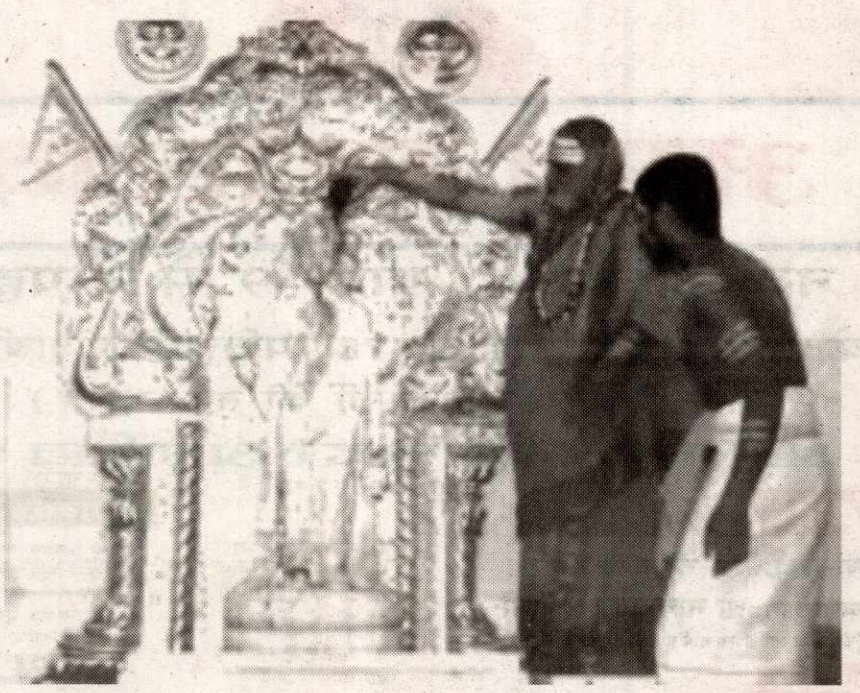

अनेक स्थल हैं जहाँ बैठकर साधक जल्दी साधना में ध्यानस्थ, एकातिक व एकनिष्ठ हो जाता है। निश्चय ही वह तपोभूमि होने का संकेत देती है जिस पर कहीं-कहीं पौराणिकों ने आधिपत्य स्थापित कर लिया है। सिद्ध पुरुष आज भी हैं जो धर्म पारायण होने से कुछ स्थानों में चमत्कारिक आकर्षण पैदा कर देते हैं जिससे कि आमजन की धर्म-प्रवृत्ति अध्यात्म में, सिद्धि में, चमत्कारों में अक्षुण्ण रहे। लेकिन ऐसे चमत्कारी सिद्ध पुरुष न तो भगवान् होते हैं, न सम्प्रदाय विशेष के प्रवर्तक होते हैं, न ही ऐसी सिद्ध पीठों से सभी को समान रूप से लाभ मिलता है और न ही उससे मूर्तिपूजा का औचित्य सिद्ध होता है। यदि सभी के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक रोग वहाँ जाने से नष्ट हो जाया करते तो भारत में न अस्पतालों व पागलखानों की जरूरत पड़ती, न तान्त्रिकों-मान्त्रिकों की पूछ होती, न फलित ज्योतिष और वास्तु शास्त्र को कोई महत्त्व मिलता। चमत्कार और सिद्धि का प्रभाव होता अवश्य है लेकिन सीमित होता है। दुष्प्रचार करके, बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करके प्राय: लोगों को भ्रमित किया जाता है। भारत में आस्था और भेड़चाल ऐसे दुष्प्रचार को ही सदाचार और परोपकार में परिवर्तित कर आगे बढ़ाती है, दीर्घजीवी बनाती है। वास्तव में सिद्ध पुरुषों के पुरुषार्थ, क्षमता और श्रेय को मूर्ति में घटित करना व उसे मूर्ति पूजा का चमत्कार मानना मूलत: गलत है।

एक सवाल

लाखों हिन्दू परिवारों ने सदियों से अपने निवास में मन्दिर बना रखे हैं जिनके आगे बैठकर वे आरती-पूजन करते हैं। हर वर्ष लाखों महिलाएँ दीवार पर सांझी सजाकर कई-कई दिन सायंकालीन उसकी पूजा-अर्चना कर अंत में उसे जल में प्रवाहित कर देती हैं। हर वर्ष लाखों परिवार दीपावली पर घर में लक्ष्मी-पूजन करते हैं। इसी प्रकार लाखों लोग हर वर्ष गोवर्धन पूजा करते हैं। इन सभी प्रसंगों में मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं होती फिर भी उसके समक्ष लोग भजन-पूजन करते हैं। जगरातों में भी मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं होती। तो क्या यह सब अपने आप में पाखण्ड सिद्ध नहीं होता?आज तक इस पाखण्ड के विरुद्ध आवाज बुलंद क्यों नहीं हुई है?क्या सनातनी धर्माचार्य इसका उत्तर देंगे?यदि यह पाखण्ड धर्मोचित है तो मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा क्या इससे भी बड़ा पाखण्ड नहीं है?

अंतिम निवेदन

निष्कर्ष रूप में पाठकों से हमारा इतना ही निवेदन रहेगा कि जब करोड़ों वर्ष तक, वेद विद्या के प्रकाश में, मूर्तिपूजा के बिना, इस धराधाम पर अध्यात्म, धर्म, आस्था, श्रद्धा, विश्वास जीवंत रहे, समृद्ध रहे, प्राणवान् रहे और भारत अपनी इसी निधि के बल पर विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित भी रहा तो आज हमें आडम्बर, पाखण्ड, अन्धविश्वास का आश्रय लेने की क्या आवश्यकता है?मूर्तिपूजा ने पहले ईश्वर को बांटा, फिर धर्म को बांटा, फिर मन्दिरों को बांटा और अब इंसानियत को बांट रही है। मूर्तिपूजा के यही नुकसान नहीं हैं और भी अनेक नुकसान हैं जिसके कारण सम्प्रदाय, पंथ, मजहब व्यावसायिक हो गये हैं, प्रदर्शनकारी हो गये हैं, झूठे प्रचार-तन्त्र के मोहताज हो गये हैं, भीड़तन्त्र के स्रोत हो गये हैं, पाखण्ड के रहनुमा हो गये हैं, धर्म-बैंक होने का श्रेय बटोर रहे हैं, मुक्ति मोक्ष के ठेकेदार हो गये हैं। इसी अनर्गल प्रचार-तन्त्र का भाण्डाफोड़ कर ऋषिवर दयानन्द ने वेदों की ओर लौटो का समाघोष गुंजाया था। वेदों के यथार्थ स्वरूप को सामने लाने के लिए ऋषिवर दयानन्द और उनके आर्य समाज के मनीषी विद्वानों का प्रशंसनीय योगदान रहा। सायण, महीधर, उब्वट, रावण, ग्रीफ्थ, मैक्डोनल, मैक्समूलर आदि ने वेदों पर जो धूल एकत्र की उस धूल के छंटने में इस योगदान से काफी सहायता मिली। योगी, अरविन्द घोष सरीखे उद्भट पुरोधा ने ऋषिवर दयानन्द के प्रयासों को अद्वितीय करार दिया। ऋषि की ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और वेदभाष्य जब प्रकाश में आये तो मैक्समूलर को भी सायण की मनोवृत्ति का परित्याग करने पर विवश होना पड़ा। ऋषिवर दयानन्द और आर्य समाज का नाम यदि जीवित है, उसे प्रशंसा यदि कहीं मिल रही है तो वेद विद्या की पुन: प्रतिष्ठा करने की बदौलत ही मिल रही है। देश-दुनिया से यदि अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा, श्राद्ध-तर्पण, कुम्भ कांवड़, फलित ज्योतिष-वास्तु शास्त्र, तन्त्र-मन्त्र, तीर्थाटन-परिक्रमा, मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा जैसे पाखण्ड, आडम्बर, अन्धविश्वास को जड़ मूल से उखाड़ फेंकना है तो हमें पुन: वेद के शरणागत होना पड़ेगा। वेद की रक्षा, प्रतिष्ठा में ही धर्म, अध्यात्म, भक्ति व साधना की रक्षा, प्रतिष्ठा निहित है।

वाई-454/455 कैम्प नं.-1
सुलतानपुरी मार्ग, नांगलोई, दिल्ली-110041
मे.:-9891110040

thearyasamaj.org

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

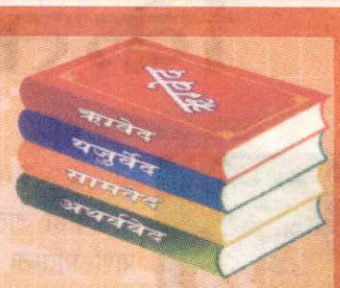

योगनिष्ठ संन्यासी, वैदिक विद्वान

पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी

के 75वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में

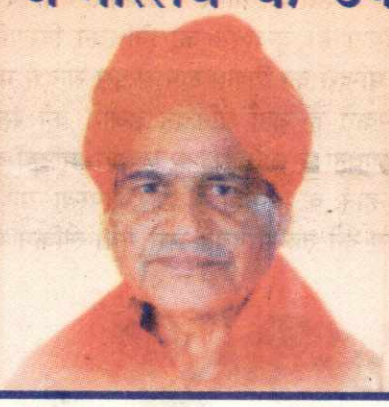

अमृत महोत्सव

रविवार 16 नवम्बर 2014, प्रातः 9 से दोपहर 2 बजे तक

स्थानः योग निकेतन सभागार, रोड नं. 78, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26

(स्वामी योगेश्वरानन्द जी की तपः स्थली)

आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

कार्यक्रम

यज्ञः प्रातः 9 बजे से 10 बजे तक–ब्रह्माः डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार

अध्यक्षताः स्वामी आर्य वेश जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली)

ध्वजारोहणः श्री मायाप्रकाश त्यागी (कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली)

मुख्य अतिथि

पद्म श्री बृजमोहन लाल मुन्जाल जी (चेयरमेन हीरो मोटो कार्प)

डॉ. अशोक कुमार चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष ऐमिटी शिक्षण संस्थान नई दिल्ली)

डॉ. योगानन्द शास्त्री (पूर्व अध्यक्ष दिल्ली विधान सभा)

श्री सतीश उपाध्याय (प्रदेश अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी)

श्री प्रवेश वर्मा (संसद सदस्य)

आशीर्वाद

स्वामी सुमेधानन्द जी	स्वामी सत्यपति जी	स्वामी विवेकानन्द जी
स्वामी धर्मानन्द जी	स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी	स्वामी धर्म मुनि जी
स्वामी अग्निवेश जी	आचार्य बलदेव जी	स्वामी चन्द्रवेश जी
स्वामी यतीश्वरानन्द जी	स्वामी जीवनानन्द जी	स्वामी रामवेश जी
स्वामी प्रणवानन्द जी	स्वामी ओमवेश जी	स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी

विशिष्ट अतिथि

श्री आनन्द चौहान	श्री महाशय धर्मपाल	आचार्य अखिलेश्वर जी
श्री योगेश मुन्जाल	श्री सत्यव्रत सामवेदी	श्री पूनम सूरी
श्री सत्यानन्द आर्य	चौ. हरिसिंह सैनी	श्री मिठाई लाल सिंह
श्री आनन्द कुमार	श्री देवेन्द्र पाल वर्मा	श्रीमती इन्दु पुरी
डा. सुरेन्द्र कुमार	श्री प्रेम प्रकाश शर्मा	डा. महावीर अग्रवाल
प्रो. विट्ठलराव आर्य	श्री अश्वनी कुमार शर्मा	श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय
श्री रूद्रसेन सिन्धु	श्री नवीन रहेजा	श्री राकेश चोपड़ा

स्वागत समिति

डॉ. महेश विद्यालंकार	श्री प्रियव्रत दाश	श्री सुरेन्द्र वधवा
श्री आनन्द कुमार आर्य	स्वामी वृता नन्द	श्री तेज राम आर्य
श्री गोविन्द सिंह भंडारी	श्री लक्ष्मी नारायण भार्गव	श्री सरदार सिंह
ब्र. राजसिंह आर्य	महात्मा देव मुनी जी	श्री धनीराम यादव
स्वामी मधुरा नन्दा	स्वामी निर्भयानन्द जी	श्री सुरेन्द्र सिंह तोमर
प्रो. स्वतन्त्र कुमार	श्री ओम शरण	श्री रोशनलाल आर्य
डॉ. धर्मपाल आर्य	श्री ओम प्रकाश अतुल	श्री छोटेलाल आर्य
डॉ. सुभाष वेदालंकार	श्री आनन्द आर्य	श्री छाजु राम आर्य
डॉ. विक्रम कुमार विवेकी	श्री अशोक गुप्ता	श्री रामानन्द आर्य
श्री अरुण अबरोल	श्री वेद प्रकाश आर्य	श्री वृजानन्द बहरोड़
श्री संगीत शर्मा	श्री भोजदेव मुदित	श्री ओमप्रकाश आर्य
श्री सुभाष बब्बर	श्री जय भगवान गुप्त	आचार्य शोमदेव शास्त्री
श्री अश्वनी डोगरा	श्री दीपचन्द आर्य	श्री ओम प्रकाश मस्करा
आचार्य विजय पाल	श्री विजय कुमार आर्य	डॉ. विरेन्द्र परिव्राजक
श्री रवीन्द्र अहलावत	श्री गुरुदत्त आर्य	श्री जितेन्द्र धवन
श्री चुनीलाल नागपाल	श्री रविदेव गुप्ता	श्री वेद प्रकाश गुप्ता
श्री ओमप्रकाश आर्य	श्री सुरेन्द्र गुप्ता	श्री ओम प्रकाश नागिया
श्री जगदीश सरपंच	श्री रवि चड्डा	श्री इन्द्र जीत आर्य
श्री रामसिंह आर्य	श्री ओम सपरा	श्री सुनील गर्ग
श्री सवाई सिंह आर्य	श्री रविन्द्र मेहता	श्री अंशु देव आचार्य
श्री दीनदयाल आर्य	श्री अशोक आर्य	श्री भूपनारायण शास्त्री
श्री राम आर्य	श्री आनन्द प्रकाश आर्य	आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
श्री खुशहाल चन्द आर्य	श्री जयचन्द आर्य	श्री सारस्वत मोहन मनीषी
श्री कपिल मुनी	श्री राकेश चोपड़ा	ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त
श्री गंगा शरण	श्री नन्दकिशोर अरोड़ा	राव हरीश चन्द्र आर्य
श्री रति राम शर्मा	डा. श्याम सिंह शशि	डॉ. आर. के. आर्य
आचार्य सुभाष चन्द	श्री कीर्ति शर्मा	आचार्य स्वदेश
प्रि. सदाविजय आर्य	डा. वेदव्रत आलोक	ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य
स्वामी आर्येषानन्द	श्री रामखिलावन सिंह	आचार्य सन्तराम
श्री दलपत सिंह आर्य	श्री रामकृष्ण सतीजा	राम कुमार सिंह आर्य
श्री गजराज सिंह	श्रीमती विमला ग्रोवर	श्री मनोहर लाल चावला
डा. विनोद चन्द्र विद्यालंकार	डा. कमल नारायण आर्य	श्री श्रद्धानन्द शर्मा
डा. लक्ष्मण दास आर्य	श्री लाजपत राय चौधरी	श्री यशोवीर आर्य
श्री नन्द किशोर	श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा	श्री धर्मदेव खुराना
श्री बाचो निधि आर्य	श्री सोमनाथ आर्य	श्रीमती गायत्री मीना
श्री रामअवतार अग्रवाल	श्रीमती सुशीला गंभीर	श्रीमती विजयारानी शर्मा

दर्शनाभिलाषी

स्वामी आर्यवेश अध्यक्ष	स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती उपाध्यक्ष	दर्शन कुमार अग्निहोत्री स्वागताध्यक्ष	डॉ. अनिल आर्य संयोजक
माया प्रकाश त्यागी स्वागत मंत्री	आचार्य प्रेमपाल शास्त्री उपाध्यक्ष	डॉ. ओम प्रकाश अग्रवाल कोषाध्यक्ष	रामेश्वर गोयल मंत्री योग निकेतन
वैद्य इन्द्रवेश प्रचार मंत्री	मुकेश मेधार्थी * महेन्द्र भाई * माता सुषमायति संयोजक गण		डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान संपादक अभिनंदन ग्रंथ

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समारोह समिति

संम्पर्कः 9810117464, 9013783101, ई-मेलः aryayouthn@gmail.com

thearyasamaj.org

युवा निर्माण

ओ३म्

राष्ट्र निर्माण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव यद् भद्रं तन्न आसुव।।

(हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए। जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है, वह सब हमको प्राप्त कराइये।)

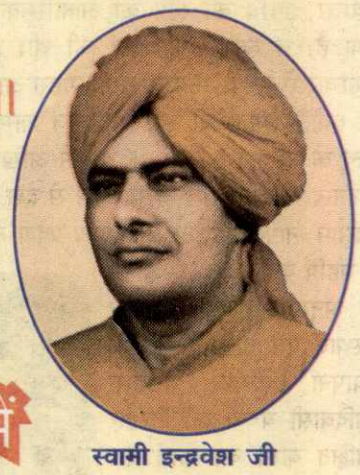

स्वामी इन्द्रवेश जी

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

विशाल युवा शक्ति सम्मेलन

दिनांक 23 नवम्बर, 2014 (रविवार) प्रातः 11 बजे से 2 बजे तक

स्थान : छोटूराम खेल स्टेडियम, सोनीपत रोड, रोहतक (हरियाणा)

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

हरियाणा के विभिन्न जिलों से 10 हजार युवक-युवतियाँ भाग लेंगे।

"युवा वर्ग को चरित्र, नैतिकता, आध्यात्मिकता, ईमानदारी, समाज सेवा एवं देशभक्ति के संस्कार देने तथा अश्लीलता, उच्छृंखलता, नशाखोरी, दहेज एवं कन्या भ्रूण हत्या आदि बुराईयों के विरुद्ध संकल्प दिलाने के लिए यह ऐतिहासिक कार्यक्रम होगा।

युवा भाईयों तथा बहनों!

आप सभी भलीभांति जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र की रीढ़ वहाँ के युवा (युवक व युवतियाँ) होते है।। आज का युवा दिशा विहीन होता जा रहा है। युवाओं में बड़ी तेजी के साथ नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अश्लीलता, नग्नता, कामुकता, अपहरण, हिंसा की प्रवृत्ति को बढ़ाने वाली फिल्मों के प्रभाव से युवा वर्ग सर्वाधिक प्रभावित हो रहा है। प्रतिदिन होते बलात्कार एवं उत्तेजक पदार्थों के खान-पान व अपहरण जैसी घटनाएं इसी का परिणाम है। अतः युवाओं को सम्भालने व सम्भलने की जरूरत है। 23 नवम्बर, 2014 रविवार को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक चौ. छोटूराम खेल स्टेडियम सोनीपत रोड रोहतक में आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की ओर से आयोजित प्रान्तीय युवा शक्ति सम्मेलन में लगभग दस हजार युवक व युवतियों को उपरोक्त बुराईयों के विरुद्ध संकल्प दिलाया जायेगा। सम्मेलन में अनेक ओजस्वी वक्ता, विद्वान व मनीषी युवाओं को सम्बोधित करेंगे तथा प्रेरक विचारों से दिशा बोध करायेंगे। यह आर्य समाज का एक अभिनव शक्ति प्रदर्शन होगा। आप सब अपने अधिक से अधिक साथियों के साथ सम्मेलन में पधारें तथा युवा निर्माण अभियान के साथ जुड़ें। सभी युवा ओ३म् के झण्डे तथा अपनी-अपनी आर्य युवक परिषदों के बैनर लेकर आयें।

निवेदक

आचार्य सन्तराम आर्य	ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य	बहन पूनम आर्या	बहन प्रवेश आर्या	डॉ. श्यामदेव
स्वागताध्यक्ष	मुख्य संयोजक	अध्यक्ष, बेटी बचाओ अभियान	संयोजक	बौद्धिकाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा)
सम्पर्क सूत्र : 0-9354840454, 9416630916 ● E-mail : yuvakparishad@gmail.com

thearyasamaj.org

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामंत्री माता प्रेमलता शास्त्री जी नहीं रहीं

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामन्त्री माता प्रेमलता शास्त्री जी का दिनांक 1 नवम्बर, 2014 की रात्रि को आकस्मिक निधन हो गया है। वे लगभग 85 वर्ष की थी। इस दु:खद समाचार से समूचे आर्य जगत को गहरा आघात पहुँचा है, क्योंकि माता जी स्व. पृथ्वीराज शास्त्री जी की मृत्यु के पश्चात् लगभग 25 वर्ष से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के माधयम से देश के पूर्वोत्तर आसाम, नागालैण्ड, उड़ीसा, मध्य प्रदेश आदि प्रान्तों में महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के अनुसार गुरुकुल, शिक्षण संस्थाएँ एवं बालवाड़ियों की स्थापना करके बेसहारा आदिवासी बच्चों को निरन्तर शिक्षित करने का कार्य कर रही थीं, इसके अतिरिक्त माता जी ने आर्य समाज रानीबाग के अन्तर्गत एक गुरुकुल की स्थापना की हुई है जिसमें अनाथ एवं बेसहारा बच्चे शिक्षित होकर आर्य समाज का प्रचार-प्रसार देश के विभिन्न प्रान्तों में करने के लिए प्रशिक्षिण प्राप्त कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने सैनिक विहार, दिल्ली में भी एक कन्या गुरुकुल की स्थापना की थी जो अवाध गति से कार्यरत है। माता जी के निधन का समाचार सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उन्हें एक कर्मठ कार्यकर्ता बताते हुए कहा कि उन्होंने दयानन्द सेवाश्रम संघ के माध्यम से पिछड़े एवं समाज की मुख्यधारा से कटे हुए लोगों की सेवा तथा उनके बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करके एक अनुकरणीय कार्य किया तथा महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा मान्यताओं को देश के पूर्वोत्तर भागों में फैलाने का कार्य किया है। उनके निधन से आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है। सार्वदेशिक सभा परिवार की परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करते हुए दयानन्द संघ से जुड़े हुए अन्य पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को माता जी के छोड़े हुए कार्य को पूर्ववत संचालित करने की शक्ति प्रदान करें, यही हम सबकी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

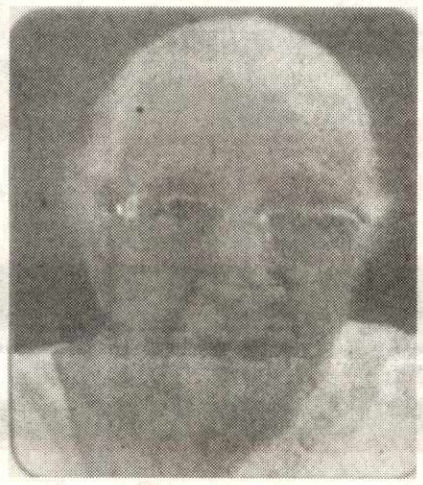

उनकी स्मृति में 4 नवम्बर, 2014 को पश्चिमी पंजाबी बाग के बगीची सभागार में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा का संचालन आर्य समाज रानीबाग के प्रधान श्री जोगेन्द्र खट्टर ने किया। इस अवसर पर डॉ. महेश वेदालंकार, स्वामी प्रणवानन्द, डॉ. योगानन्द शास्त्री, डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, महाशय धर्मपाल आर्य, माता ईश्वर रानी, जीव वर्धन शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, स्वामी दुग्धाहारी तथा माता जी के दत्तक पुत्र श्री विनोद जी ने अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके चमत्कारी कर्मठ व्यक्तित्व तथा उनके कार्यों पर प्रकाश डाला।

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय जी का निधन

आर्य समाज विधान सरणी, कलकत्ता के मुखपत्र 'आर्य संसार' के ख्यातिलब्ध सम्पादक प्रो. उमाकान्त उपाध्याय जी का 87 वर्ष की आयु में गत 2 नवम्बर को उनके अपने निवास स्थान ईशवास्यम्, कालिन्दी, कोलकाता पर प्रात: 5.15 बजे निधन हो गया। वे गत कई महीनों से रोग-शय्या पर पड़े थे। दो दिन बाद ही उनका जन्म दिन मनाया जाना था। 9 नवम्बर, 2014 (रविवार) को आर्य समाज, विधान सरणी में शोकसभा का आयोजन किया गया है। आर्य पत्रिकारिता व लेखन-क्षेत्र में प्रो. उमाकान्त उपाध्याय जी को मूर्धन्य स्थान प्राप्त था। वे वर्षों से 'आर्य संसार' का सम्पादन विद्वतापर्वूक, मनोयोग से करते आ रहे थे, यद्यपि वे काफी अस्वस्थ चल रहे थे। 'युग-निर्माता सत्यार्थ प्रकाश-संदर्भ दर्पण', 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज की देन', 'वेद-वैभव' 'कर्मकाण्ड', 'मेरे पिता', 'व्यतीत के यश की धरोहर', 'प्रार्थना-प्रवचन', 'वेद में गोरक्षा या गोवध' आदि अनेक पुस्तकें उन्होंने लिखी हैं। उनके निधन से आर्य समाज ने एक ऐसा रत्न खो दिया है जिसकी पूर्ति सहज सम्भव नहीं है। उनके विद्वतापूर्ण सम्पादकीय वर्षों तक पाठकों के मानस मण्डल पर प्रभाव रखेंगे। मधुर व्यवहार और अतिथि सेवा में भी वे बेजोड़ माने जाते थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा परिवार उनके निधन पर गहन शोक प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना तथा उनके परिजनों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम रामघाट मार्ग अलीगढ़ का राष्ट्रीय शौर्य पर्व विजय दशमी पर आयोजित वार्षिकोत्सव शुक्रवार 3 से 6 अक्टूबर, 2014 को परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और विद्वानों के आशीर्वाद एवं श्रद्धालु जनता व पदाधिकारियों के सहयोग से बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

सारे महानगर में वेद प्रचार की एक लहर दौड़ रही थी। चारों ओर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव की चर्चा थी। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में तीनों ही वर्ग यथा - बाल, युवा व बृद्ध, महिला एवं पुरुषों ने समान रूप से बढ़-चढ़ कर भाग लिया। सन् 1974 से स्थापित इस आर्य समाज का यह इतना विशाल पहला उत्सव था जिसकी प्रतयेक जन मानस ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और कार्यक्रम को सराहा और सैद्धान्तिक प्रचार होने से लोगों ने अपने को बदलने का संकल्प भी लिया।

कार्यक्रम 3 अक्टूबर को प्रात: 7.30 बजे यज्ञ से पं. सुरेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात् सामूहिक वैदिक संध्या तथा पं. राजवीर शास्त्री ने ईश महिमा का भजन प्रस्तुत किया इसके बाद आचार्य ब्रजेश शास्त्री ने यज्ञ की वैज्ञानिक व्याख्या कर उपस्थित जन समूह की वाह-वाह लूटी। यही क्रम अगले चार दिन क्रमश: चलता रहा। सायंकालीन सत्र मध्यान्ह 4 बजे से प्रारम्भ होकर रात्रि 9 बजे तक प्रतिदिन चलता रहा जिसमें प्रतिदिन ईश भजन, मधुर वेद प्रचन के अतिरिक्त अन्य अनेक कार्यक्रम भी समय-समय पर होते रहे। प्रत्येक दिन अलग-अलग चार दिवस में अलग-अलग 4 महानुभावों को उनके द्वारा किये गये समाज में अद्वितीय कार्यों के लिए उन्हें अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया। जिसमें 3 अक्टूबर आर्य युवक दिवस पर श्री योगेश यादव, 4 अक्टूबर आर्य राष्ट्र दिवस पर श्री सतीश गौतम सांसद अलीगढ़ 5 अक्टूबर आर्य पितृ दिवस पर पं. शिवस्वरूप शर्मा संरक्षक आर्य समाज एवं 6 अक्टूबर आर्य मातृ दिवस पर श्रीमती उषा गर्ग को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

वैदिक सम्पत्ति - सुसंस्कारों को देने में कोताही। चतुर्थ दिन व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में नारी श्रेष्ठ तो समाज श्रेष्ठ पर वैदिक विचार।

दिनांक 5 अक्टूबर को सायंकालीन सत्र में नेत्रदान जागरूकता कार्यक्रम नेत्रकोष संस्थान जवाहरलाल नेहरू मेडीकल कॉलेज ए. एम. यू. अलीगढ़ के सहयोग से हुआ जिसमें अलीगढ़ आई वॉलिन्टियर एसोसिएशन ''आईवा'' के पदाधिकारी श्री अनिल वार्ष्णेय ने नेत्रदान के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा नेत्रदान संकल्प पत्र भी लोगों ने भरकर वहीं पर जमा किये।

दिनांक 6 अक्टूबर को सायंकालीन सत्र में जनपद अलीगढ़ के समस्त दैनिक यज्ञ कर्त्ताओं को ''अग्निहोत्री'' की उपाधि से सम्मानित किया गया जिसमें लगभग 96 लोग ''अग्निहोत्री'' की उपाधि से नवाजे गये। इस कार्यक्रम की भी जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसी दिन नशामुक्ति अभियान के तहत इं. सत्यवीर सिंह ने शराब के बारे में राज्य व केन्द्र सरकार के सरकारी आंकड़ें प्रस्तुत कर जनता को लाभ-हानि से परिचित कराया। इसी दिन श्री सुखदेव शर्मा इन्दौर प्रकाशक वैदिक संसार मासिक का भी अभिनन्दन समाज के पदाधिकारियों ने किया।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन समाज के मंत्री डॉ. पपेन्द्र आर्य ने किया तथा चारों दिन दोनों समय ऋषि लंगर की समुचित व्यवस्था रही।

इस अवसर पर डॉ. जयसिंह सरोज, पं. शिवस्वरूप शर्मा, डॉ. पपेन्द्र आर्य, डॉ. खुशपाल, डॉ. विजयपाल सिंह, योगेश शर्मा, रामदीन आर्य, आदेशपाल सिंह, इं. शेर सिंह आर्य, प्राचार्य इन्द्रपाल सिंह, देवनारायण भारद्वाज, बाबूसिंह, इं. के. सी. शर्मा, सुरेन्द्रपाल आर्य, राजेन्द्र शर्मा, होडिल सिंह तोमर, रामसिंह राठौर, डॉ. यशपाल रावल, अनिल चौहान, जयप्रकाश, रमेश रावत, विनोद आर्य, वैद्य नन्दकिशोर आर्य, गंगास्वरूप गोयल, श्रीमती शशिप्रभा गोयल, रत्नेश भैयाजी, मनोरमा देवी आर्य, विनीता आर्य, स्वत: आर्य, मुन्नी आर्य, गुलशन सचदेव आदि मौजूद रहे।

- डॉ. पपेन्द्र आर्य, मंत्री, आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ. प्र.)
मो.:-9319788727, 9548959426

स्वामी दयानन्द का 131 वाँ निर्वाण दिवस
आत्म विस्मृत राष्ट्र को महाजागरण का मंत्र दिया दयानन्द ने

19वीं शताब्दी में अधनंगे फकीर दयानन्द सरस्वती एक बेजोड़ संन्यासी हुए जिन्होंने सदियों से आत्मविस्मृत राष्ट्र को महाजागरण का मंत्र दिया, उन्होंने राष्ट्रवाद की ऐसी संजीवनी दी जिससे गौरव के साथ भारतीय अस्मिता को अक्षुण्ण रखा जा सके, उक्त विचार काशी आर्य समाज बुलानाला में आयोजित स्वामी दयानन्द के 131वें निर्वाण दिवस समारोह के अवसर पर बृहस्पतिवार को आर्य नेता डॉ. जयप्रकाश भारती पुस्तकाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

विशिष्ट अतिथि श्री बेचन सिंह वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ ने कहा कि दयानन्द का निर्वाण दीपावली के दिन हुआ लेकिन दयानन्द ने भारत ही नहीं समूचे विश्व को वैदिक ज्ञान का आलोक दिया।

मुख्य वक्ता काशी आर्य विद्वत परिषद् के अध्यक्ष पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने बतलाया कि दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम स्वराज्य का मंत्र दिया, उन्होंने दलितोत्थान व नारीजागरण एवं उन्हें समान दर्जा दिलाने की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

काशी आर्य समाज के मंत्री प्रकाश नारायण शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानन्द को विष दिया जाना दुर्भाग्यपूर्ण रहा, स्वामी जी ने प्राचीन ऋषि-मुनियों की ज्ञान परम्परा को सर्व सुलभ कराया।

इस अवसर पर आर्य समाज के कोषाध्यक्ष डॉ. विशाल सिंह आर्य, विदुषी डॉ. गायत्री आर्या तथा सत्यनिष्ठा आर्या ने भी विचार व्यक्त किये, आर्य गायक श्री रमेश जी आर्य ने सुमधुर भजन प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया।

अध्यक्षीय सम्बोधन में काशी आर्य समाज के प्रधान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने बताया कि दयानन्द ने दलितों तथा नारियों को वेदाध्ययन का अधिकार दिलाया जिससे वह सैकड़ों साल से वंचित थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वृहद वैदिक यज्ञ से हुआ जो श्री मोतीलाल, पं. ज्ञान प्रकाश आर्य तथा लालचन्द्र आर्या के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। विभा आर्य एवं हेमा आर्य ने यज्ञ का संयोजन किया।

अतिथियों का स्वागत कोषाध्यक्ष डॉ. विशाल सिंह एडवोकेट ने किया। शांति पाठ लाल चन्द्र आर्य ने कराया।

- प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री आर्य समाज बुलानाला, वाराणसी-221001 (उ. प्र.)

युवा चरित्र निर्माण एवं आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सोल्लास सम्पन्न

वैदिक धर्म की रक्षा में अहर्निश सेवारत गुरुकुल आश्रम आमसेना के प्रांगण में 7 अक्टूबर, 2014 को विजयादशमी के अवसर पर युवा चरित्र निर्माण एवं आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सोल्लास सम्पन्न हुआ।

इस शिविर का शुभारम्भ 2 अक्टूबर को नुआपड़ा जिले के यशस्वी विधायक श्री बंसत भाई पण्डा के करकमलों से ओ३म् ध्वजोत्तोलन द्वारा हुआ। इस शिविर में छत्तीसगढ़, ओड़िसा से 200 आर्यवीरों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर में उन्हें आत्मरक्षा के उपायों के साथ-साथ चरित्र निर्माण का भी प्रशिक्षण दिया। शिविर का प्रशिक्षण सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रचार मंत्री श्री चन्द्रदेव जी तथा आचार्य मुकेश जी ने दिया।

छ: दिवसीय इस शिविर में अनेक आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत ग्रहण कर शराब, मांस, नशा सेवन से दूर होकर आजीवन देश, धर्म की रक्षा करने का संकल्प लिया। शिविर में गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती, उपाचार्य डॉ. कुञ्जदेव जी मनीषी, वा. विशिकेशन जी शास्त्री, आचार्य रणजीत जी 'विवित्सु', आ. मनुदेव वाग्मी तथा विश्वामित्र जी 'मुमुक्षु' का भी विशेष सहयोग रहा। शिविर के आयोजन की सारी व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई।

समापन समारोह 7 अक्टूबर को गुरुकुल आश्रम आमसेना के संस्थापक एवं संचालक स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर श्री शरच्चन्द्र जी शरत् (उपजिलापाल, नुआपड़ा), श्री राजूभाई धोलकिया (पवूं विधायक, नुआपड़ा), सीआरपीएफ कमाण्डर श्री प्रधान जी, श्री सुरेश अग्रवाल जी, डॉ. केवलचन्द्र जी साहू आदि अनेक आर्य सज्जनों की उपस्थिति थी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुञ्जदेव जी मनीषी तथा आनन्द कुमार जी शास्त्री ने किया। पुरस्कार वितरण उपरान्त मध्यान्ह 2 बजे शान्तिपाठ पूर्वक यह कार्यक्रम हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

- डॉ. कुञ्जदेव 'मनीषी' संचालक, उत्कल प्रान्तीय आर्यवीर दल, ओड़िशा

सार्वदेशिक सभा के पूर्व मंत्री स्व. श्री सूर्यदेव जी की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी जी का निधन

आर्य जगत की वरिष्ठ नेत्री, आर्य समाज दीवान हाल की अन्तरंग सदस्या आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली, आर्य समाज एजुकेशनल ट्रस्ट, स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ट्रस्ट तथा अनेक विद्यालयों की संस्थापक, श्रीमती सावित्री देवी का निधन दिनांक 15 अक्टूबर, 2014 को हो गया। उनका अंतिम संस्कार दिनांक 16 अक्टूबर को वैदिक रीति से निगम बोध घाट पर किया गया।

श्रीमती सावित्री देवी आर्य समाज के मूर्धन्य नेता, पूर्व संसद सदस्य स्व. लाला रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्द बोध सरस्वती) जो वर्षों तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान तथा अनेकों देश और विदेशों की गतिविधियों से जुड़े रहे उनकी सुपुत्री थीं तथा जीवन पर्यन्त आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगी रहीं।

श्रीमती सावित्री देवी स्व. श्री सूर्यदेव जी की धर्मपत्नी थीं। ज्ञातव्य हो स्व. श्री सूर्यदेव जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री, आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली के प्रधान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के चांसलर पद को सुशोभित किया था। उन्होंने अनेकों दूसरी संस्थाओं का भी नेतृत्व किया था जिनमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, माता सतध्रामा ट्रस्ट, स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ट्रस्ट, आर्य बालगृह पटौदी हाऊस इत्यादि हैं।

स्व. श्रीमती सावित्री देवी के परिवार में अब डॉ. (मेजर) रविकांत (सेवा निवृत्त), मंत्री आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली, श्री शशिकांत (पूर्व मंत्री) आर्य समाज सूरजमल विहार तथा पुत्री श्रीमती ऋचा राव (जिनका विवाह वरिष्ठ आर्य नेता तथा सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्व. वंदेमातरम रामचन्द्र राव के सुपुत्र श्री आदित्य प्रताप से हुआ है। उनकी सांस्कृतिक विरासत को संभाल रहे हैं। सार्वदेशिक सभा परिवार दिवंगत के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा दु:खी परिवार जनों को इस कठिन समय में धैर्य प्रदान करने की परमात्मा से प्रार्थना करता है।

ए सी पुण्यात्मा को शत-शत नमन ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति एवं मोक्ष प्रदान करें।

उनकी स्मृति में 19 अक्टूबर को सत्धामा सीनियर सैकेण्डरी स्कूल करोलबाग में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें पारिवारिक सदस्यों के अतिरिक्त सैकड़ों व्यक्तियों ने उनको अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश, एम. डी. एच. के महाशय धर्मपाल, डॉ. महेश विद्यालंकार, विमल वधावन एडवोकेट, डॉ. अनिल आर्य, वैद्य इन्द्रदेव, जगदीश आर्य, सुभाष आर्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने श्रीमती सावित्री देवी के व्यक्तित्व और उनके किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला।

वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा सम्पन्न

आर्य समाज धौलपुर के पांच दिवसीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री वेद प्रकाश आर्य व मंत्री श्री रघुवीर प्रसाद जी शर्मा ने वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश किया। सैकड़ों लोगों की गरिमामयी उपस्थिति में आर्य समाज जुरहरा जिला-भरतपुर के कार्यकर्त्ता उत्तम चन्द्र जी आर्य ने खण्डेलवाल धर्मशाला जुरहरा में वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण की। श्री वेद प्रकाश आर्य का नाम श्री वेदमुनि, श्री रघुवीर प्रसाद शर्मा का नाम रघुवीर मुनि और उत्तम चन्द जी का नाम उत्तम मुनि रखा गया।

वानप्रस्थ दीक्षा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती संचालक श्री कृष्ण आर्ष गुरुकुल गोमत जिला-अलीगढ़ (उ. प्र.) द्वारा सम्पन्न कराई गई। जनपद के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती आर्य नेता ओम प्रकाश जी आर्य, टीकाराम जी आर्य, श्री कर्णदेव आर्य, गोविन्द राम जी आर्य, श्री पदम चन्द्र आर्य, श्री ब्रह्मदेव आर्य, मा. मंगलदेव आर्य, श्री सुभाष सिंगला आदि आर्य नेताओं ने वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करने वाले मुनिजनों को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने कहा कि वानप्रस्थ आश्रम तप व त्याग का आश्रम है। वानप्रस्थी को तप, त्याग का जीवन व्यतीत करना चाहिए। वानप्रस्थ सबको लेना चाहिए संन्यासी योग्यतानुसार बनें। उन्होंने कहा कि त्याग सुख देता है और वियोग दु:ख देता है।

- टीकाराम आर्य, प्रधान आर्य समाज जुरहरा (राज.)

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 7–8 नवम्बर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 06 नवम्बर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक
06 से 12 नवम्बर, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

राजा वरुण सब-कुछ जानता है

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निळायं चरति यः प्रतंकम्।
द्वौ सन्निषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरुणस्तृतीयः।।

—अथर्व० ४/१६/२

ऋषिः—ब्रह्मा।। देवता—वरुणः।। छन्दः—त्रिष्टुप्।।

विनय—पाप से वास्तव में डरने वाले मनुष्य संसार में विरले ही होते हैं। प्रायः लोग पाप करने से नहीं डरते, किन्तु पापी समझे जाने से डरते हैं। जहाँ कोई देखने वाला न हो वहाँ अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाना, कोई पाप कर लेना, साधारण बात है। पाप व अपराध कर्म से बचने की कोई कोशिश नहीं करता; कोशिश तो इस बात की होती है कि हम वैसा करते हुए कहीं पकड़े न जाएँ। यही कारण है कि मनुष्य अपने बहुत–से कार्य छिपकर अकेले में करने को प्रवृत्त होता है, परन्तु यदि उसे इस संसार के सच्चे, एकमात्र राजा वरुणदेव की जानकारी हो तो वह ऐसे घोर अज्ञान में न रहे। यदि उसे मालूम हो कि वे जगत् के ईश्वर वरुण भगवान् सर्वव्यापक और सर्वद्रष्टा हैं तो वह पाप के आचरण करने से डरने लगे; वह एकान्त में भी कभी पाप में प्रवृत्त न हो सके। यदि हम समझते हैं कि हम कोई काम गुप्त रूप में कर सकते हैं तो सचमुच हम बड़े धोखे में हैं। उस सर्वद्रष्टा, सर्वव्यापक वरुण से तो कुछ भी छिपाकर करना असम्भव है। जब हम दो आदमी कोई गुप्त मन्त्रणा करने के लिए किसी अँधेरी–से–अँधेरी कोठड़ी में जाकर बैठते हैं और सलाहें करने लगते हैं, तो यद्यपि हम समझ रहे होते हैं कि हम दोनों के सिवाय संसार में और कोई इन बातों को नहीं जानता, तथापि इन सब बातों को वह वरुण देव वहीं तीसरा होकर बैठा हुआ सुन रहा होता है। यदि हम वहाँ से उठकर किसी किले में जा बैठें, या किसी सर्वथा निर्जन वन में पहुँच जाएँ तो वहाँ पर भी वह वरुणदेव तो तीसरा साक्षी होकर पहले से बैठा हुआ होता है। उससे छिपाकर हम कुछ नहीं कर सकते। यदि हम दूसरे किसी आदमी को भी कुछ नहीं बताते, केवल अपने ही मन में कुछ सोचते हैं, तो वह वरुण उसे भी जानता है, सब सुनता है। हमारे चलने या ठहरने को, हमारी छोटी–सी–छोटी चेष्टा को वह जानता है। जब हम दूसरों को धोखा देते हैं, ठग लेते हैं और समझते हैं कि इसका किसी को पता नहीं लगा, तब हम स्वयं कितने भारी धोखे में होते हैं। क्योंकि, उस वरुण को तो सब–कुछ पता होता है और हमें उसका फल भोगना पड़ता है।

शब्दार्थ—यः तिष्ठति, चरति=जो मनुष्य खड़ा है, या चलता है, **यः च वञ्चति**=जो दूसरों को ठगता है **यः निलायं चरति**=जो छिपकर कुछ करतूत करता है **यः प्रतंक चरति**=जो दूसरों को भारी कष्ट आदि देकर अत्याचार करता है और **द्वौ सन्निषद्य**=जब दो आदमी मिलकर, एक–साथ बैठकर, **यत् मन्त्रयेते**=जो कुछ गुप्त मन्त्रणाएँ करते है। **तत्**=उसे भी **तृतीयः**=तीसरा होकर **वरुणः राजा**=सर्वश्रेष्ठ सच्चा राजा परमेश्वर **वेद**=जानता है।

साभार-'वैदिक विनय' से

आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

फेसबुक : Swami Aryavesh
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

20 नवम्बर, 2014 तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।